REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 6 | MARCH - 2024

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का एक अध्ययन

डॉ. मन्दीप कुमार[1], ऋचा[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर,शिक्षा संकाय, दीवान इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज, मेरठ (उ०प्र०)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर,शिक्षा संकाय, दीवान इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज, मेरठ (उ०प्र०)

सारांश

बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है तथा उसकी प्रथम अध्यापिका उसकी माता मानी जाती है। बालकों व बालिकाओं के चरित्र, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं माता–पिता के आपसी सम्बन्धों का सीधा प्रभाव बालकों के व्यवहारों पर पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रूप में स्थापित होती है कि घर में अभिभावक बालकों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखते हैं, बालक तथा बालिकाओं का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर भी अवश्य पड़ता है। विशेष रूप से तीन प्रकार के अनुशासन को प्रयोग में लाया जाता है.दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक अनुशासन, मुक्त्यात्मक या हस्तक्षेप रहित अनुशासन। शोध अध्ययन का उद्देश्य, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक, पारिवारिक वातावरण एवं प्रभावात्मक, पारिवारिक वातावरण एवं मुक्त्यात्मक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।यह शोध कार्य मुख्यतः मेरठ जिला के माध्यमिक विद्यालयों में सम्पन्न किया गया। इस शोध कार्य में केवल 80 छात्र एवं छात्राओ को चयनित किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि को उपर्युक्त पाया। इस शोध के हेतु शोधकर्त्ता के द्वारा पारिवारिक वातावरण तथा अनुशासन प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।शोध अध्ययन हमें यह बताता है कि पारिवारिक वातावरण एवं प्रभावात्मक अनुशासनिक व्यवस्था तथा पारिवारिक वातावरण एवं हस्तक्षेप रहित अनुशासनिक व्यवस्था का शैक्षिक निष्पत्ति पर पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक अनुशासनिक व्यवस्था से ज्यादा सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य सूचक शब्द– पारिवारिक वातावरण, दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक अनुशासन, मुक्त्यात्मक या हस्तक्षेप रहित अनुशासन, शैक्षिक उपलब्धिया।

प्रस्तावना

बालक के सर्वांगीण विकास में केवल विद्यालयी अनुशासन की ही नहीं अपितु पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है तथा उसकी प्रथम अध्यापिका उसकी माता मानी जाती है। बालकों व बालिकाओं के चरित्र, व्यक्तित्व एवं

शैक्षिक उपलब्धियों पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं माता–पिता के आपसी सम्बन्धों का सीधा प्रभाव बालकों के व्यवहारों पर पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रूप में स्थापित होती है कि घर में अभिभावक बालकों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखते हैं, बालक तथा बालिकाओं का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है, जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर भी अवश्य पड़ता है। आमतौर पर प्रत्येक परिवार के बालकों तथा बालिकाओं के साथ अभिभावक विभिन्न प्रकार के व्यवहार, उनको अनुशासन में रखने के लिए करते हैं।

विशेष रूप से तीन प्रकार के अनुशासन को प्रयोग में लाया जाता है.दमनात्मक अनुशासन प्रभावात्मक अनुशासन मुक्त्यात्मक या हस्तक्षेप रहित अनुशासन। अनुशासन की ये विचारधाराएं अभिभावकों तथा अध्यापकों दोनों के लिए लागू होती है। बच्चों के दृष्टिकोण से अभिभावकों द्वारा लागू की गई अनुशासन प्रणाली अधिक महत्वपूर्ण है। एक ओर अध्यापक उस अनुशासन प्रणाली का पालन करता है जोकि प्रशासनिक दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो, तो दूसरी ओर अभिभावक उस प्रणाली का पालन करते है जो उनके घर की व्यवस्था को सुचारू बनायें रखने तथा बालकों एवं बालिकाओं के विकास की दृष्टि से उपयोगी हो। यद्यपि दोनों का उद्देश्य अपने–अपने तरीकों से विद्यार्थियों का विकास करना ही है। इस सन्दर्भ में कुछ अभिभावकों का ध्यान पूरे परिवार की व्यवस्था पर अधिक होता है। हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार विद्यार्थी को बड़ा गौरवमयी स्थान दिया गया है। परन्तु भारतीय परिवारों में विद्यार्थियों को एक औसत सम्मान की दृष्टि से देखा जा सकता है। अधिकांश परिवारों में अभिभावक बालक को छोटी–छोटी बात पर झगडते, गालियाँ देते है और उन्हें मारपीट तक भी करते हैं इस प्रकार के दमनात्मक अथवा एकाधिकारात्मक व्यवहार से बालक के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वह अन्तर्मुखी हो जाता है और जिन कार्यों से उसको माता–पिता रोकते है, उनको वह स्वप्नों दिवास्वप्नों और कल्पनाओं से पूरा करने का विचार करता रहता है। माता पिता की अवहेलना और प्रताड़ना से बालक अन्तर्मुखी तो बनता ही बनता है, उसके साथ बच्चा दबंग व उद्दण्डी भी हो सकता है।

इस प्रकार बालक में स्वतंत्र रूप से निर्णय करने की योग्यता का समुचित विकास नहीं हो पाता है, जो कि वयस्क आयु में जीवन संघर्ष में अत्यन्त आवश्यक होता है। यदि बालक अपने कार्यों एवं वस्तुओं का चुनाव स्वयं करे, स्वयं निश्चित करे कि उसे क्या खाना है, क्या पहनना है, कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़नी है, क्या–क्या कार्य करने हैं आदि कार्य करने की शक्ति उसमें उत्पन्न होती है, परन्तु यदि ये सब उसके माता–पिता निश्चित करें, तो उसे अपनी निर्णय शक्ति के उपयोग का अवसर ही नहीं मिलता है। इस प्रकार माता–पिता द्वारा अत्यधिक प्रताड़ित किये जाने वाले बालकों को जीवन में अनेक प्रकार की सामाजिक तथा व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके साथ–साथ जो अभिभावक बच्चों को अधिक दुलार करते हैं, वे बच्चे भी अधिक बहिर्मुखी होने के साथ–साथ माता व पिता पर अधिक आश्रित हो जाते हैं और इस प्रकार उनका विकास भी पूरी तरह सन्तुलित नहीं हो पाता है।

अतः अभिभावकों द्वारा अधिक डांटने अर्थात् प्रताड़ित किये जाने वाले और आवश्यकता से अधिक प्यार किए जाने वाले दोनों तरह के बालकों में व्यक्तित्व सम्बन्धी उलझने समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। व्यक्तित्व की उलझनों को दूर करने के उद्देश्य से व्यवहार चिकित्सालयों में लाये गये बालकों में बहुत से बालकों की व्यक्तित्व संबंधी परेशानियों का कारण उनके प्रति उनके माता–पिता का व्यवहार ही होता है। इसी प्रकार जो अभिभावक अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं, उन बच्चों के उद्दण्डी व दबंग बनने की पूरी सम्भावना रहती है, जो उसके भविष्य के लिए नुकसानदेह होती है। अतः अभिभावकों को बच्चों के साथ सन्तुलित व्यवहार करना चाहिए, जिससे बालक का सन्तुलित विकास हो सके और उसकी शिक्षा व्यवस्था पर सार्थक प्रभाव पड़ सके।

सिगमण्ड फ्रायड ने इस विषय में तादात्म्य के तत्व पर अधिक जोर दिया है। माता–पिता बच्चों से अधिक शक्तिशाली एवं कार्यशील होते हैं। अतः बच्चे के सामने वे एक आदर्श के समान होते हैं। बच्चा भी उन जैसा बनना चाहता है। इस प्रकार बच्चा माता–पिता में से किसी भी व्यक्तित्व के साथ अपने से तादात्मय स्थापित कर लेता है। परिवारों के प्रतिमानों में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, वे भारतीय संस्कृति की गतिशीलता के द्वारा हुए है। स्त्रियों और पुरूषों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी

परिवर्तन हुए है। परिवार का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। गांवों की अपेक्षा शहरों के परिवार अधिक छोटे होते जा रहे हैं। बच्चों पर भी आजकल परिवार का उतना नियन्त्रण नहीं रहा, जितना होना चाहिए, क्योंकि आजकल परिवार के प्रत्येक सदस्य अपने–अपने कार्यों व व्यवसाय आदि में अधिक व्यस्त रहते हैं। बच्चों पर पूर्णतः ध्यान नहीं रख पाते हैं। व्यावसायिक कार्यकलाप अधिक होने के कारण आज परिवार की संरचना में परिवर्तन आ रहा है। बालकों की शिक्षा की ओर अभिभावक अधिक ध्यान रखते हैं, इसका कारण है– देश में बढ़ती बेरोजगारी व सुविधाओं का अभाव। अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान तो काफी देते हैं लेकिन उन्हें चिंता इस बात की रहती है कि लिखने–पढ़ने के बाद भी रोजगार मिलेगा या नहीं।

इस प्रकार पारिवारिक सम्बन्धों में इन परिवर्तनों का मुख्य कारण औद्योगीकरण, नगरीकरण, बेरोजगारी, सुविधाओं का अभाव आदि कुछ प्रमुख कारण है जिन्होंने पारिवारिक संरचना में परिवर्तन कर दिया है। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण व अनुशासन पहले की अपेक्षा बहुत भिन्न हो गया है। पारिवारिक वातावरण के परिवर्तन का एक कारण वैयक्तिक भिन्नता भी है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मानसिक, संवेगात्मक, व्यक्तित्व आदि दशाओं में भिन्न होते हैं। यही कारण है की जिससे बच्चों के अधिगम तथा विकास की क्रियाओं में पृथकता होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव के जीवन में मूल्य का बहुत महत्व होता है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से संबंधित होता है। मानव इन मूल्यों को अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से सीखने लगता है और धीरे–धीरे अपने अन्तःकरण में ग्रहण कर लेता है, यदि उसका पालन–पोषण उत्तम वातावरण में हुआ है, जहां उच्च नैतिक मूल्य एवं जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते हैं तो वह अपने जीवन में उन्हें आत्मसात कर लेता है। मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने में एवं उन्हें आत्मसात करने में शिक्षा व उत्तम पारिवारिक वातावरण का बहुत योगदान रहता है।

जब बालक या बालिका किशोरावस्था ग्रहण करता है तब अभिभावकों तथा किशोर बच्चों के संबंधों में असमायोजन प्रारम्भ हो जाता है। किशोरों की आयु बढ़ने के साथ–साथ संबंधों में असमायोजन बढ़ता ही चला जाता है। इस अवस्था में बच्चा बाल्यावस्था से आगे बढ़कर किशोरावस्था में पहुँचता है तथा प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर रहता है। इसमें बालक के अंदर उचित व अनुचित विचार आते हैं, इस अवस्था में बालकों का ध्यान रखना अभिभावकों का विशेष दायित्व होता है। इस अवस्था में किशोरों से अभिभावकों की यह शिकायत रहती है कि बालक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह ठीक प्रकार से नहीं करते है।

शोध का महत्व.

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को विशेष ढांचे में ढाला जाता है तथा बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इन परिवर्तनों में शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। परिवार को शिक्षा का एक अनौपचारिक साधन माना गया है।। बालक एक छोटे पौधे के समान होता है, उसे फलने–फूलने के लिए जितना खुला व स्वाभाविक वातावरण व अनुशासन मिलेगा, वह उतना ही उत्तम पल्लवित होगा। उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चे किशोरावस्था के आस–पास होते हैं, वह अधिकांशतः अपना निर्णय स्वयं लेते हैं।उनके व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों पर अनुशासन के प्रकार का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसे. पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक अनुशासन, प्रभावात्मक तथा मुक्तयात्मक अनुशासन व्यवस्था। शोध में यह स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि हमारे परिवारों में जिस प्रकार की अनुशासनिक व्यवस्था प्रचलित है तथा उसका बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा प्रभाव पड़ेगा। यह शोध मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है.

शोध समस्या का कथन.

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का एक अध्ययन।

अनुशासन.

अनुशासन शब्द का अर्थ है. व्यवस्था। दमन या दण्ड द्वारा बालक या बालिका की इच्छा को शिक्षक/अभिभावक की इच्छा के अनुकूल बनाना। बाह्य व्यवहार, आत्म नियंत्रण, उत्तरदायित्व की भावना, भावनाओं के प्रति सम्मान एवं दूसरों के अधिकारों के प्रति सम्मान सभी कुछ आ जाते हैं। पाठ पढ़ाते समय कक्षा में शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना, शिक्षक के प्रति किसी भी प्रकार का असम्मान न होने देना ही अनुशासन या व्यवस्था है तथा विद्यार्थियों को सुसंस्कृत व सुसभ्य बनाने के लिए स्वभाव पर सीधा प्रभाव डालना, प्रशिक्षण या अनुशासन है।अनुशासन वह साधन है, जिसके द्वारा बच्चों को व्यवस्था, उत्तम आचरण और उनमें निहित सर्वोत्तम गुणों की आदत को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन.

पारिवारिक अनुशासन, पारिवारिक वातावरण में सम्मिलित होता है। परिवार के वातावरण के अन्तर्गत पूरे घर तथा परिवार का वातावरण आता है। इसके अन्तर्गत माता व पिता के आपसी संबंध, माता–पिता, भाई–बहन तथा सभी बच्चों के बीच आपसी संबंध, पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण या प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं आचरण, परिवार का व्यावसायिक वातावरण आदि, जैसे व्यापारी, शिक्षक, इन्जीनियर होना आदि अनेक तत्व आते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि. शैक्षिक उपलब्धि किसी विषय विशेष अथवा विषयों के समूहों के अवबोध, ज्ञान, समझ या दक्षता की माप प्रदर्शित करती है।बालक की शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए अनेक प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य.

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं प्रभावात्मक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण एवं मुक्त्यात्मक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पारिवारिक वातावरण एवं प्रभावात्मक अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पारिवारिक वातावरण एवं हस्तक्षेप रहित या मुक्त्यात्मक अनुशासन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन का सीमांकन.

1. यह शोध कार्य मुख्यतः मेरठ जिला के माध्यमिक विद्यालयों में सम्पन्न किया गया।
2. यह शोध कार्य केवल कक्षा 9 के छात्र एवं छात्राओं पर सम्पन्न किया गया है।
3. इस शोध कार्य में केवल 80 छात्र एवं छात्राओ को चयनित किया गया है।

अध्ययन विधि.

किसी भी शोध अध्ययन में सत्य की खोज करने के लिए अध्ययनविधि का निश्चित करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि तथा क्रियात्मक विधि को उपर्युक्त पाया।

प्रयुक्त चर.

पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन को स्वतन्त्र चर माना है। जबकि शैक्षिक निष्पत्ति को आश्रित चर माना गया है।

शोध की जनसंख्या.

समष्टि का वह भाग जो कि शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन हेतु चुना जाता है, वह शोध की जनसंख्या कहलाता है। प्रत्येक समस्या के अध्ययन के लिए उपयुक्त जनसंख्या का निर्धारण आवश्यक होता है जिससे कि समस्या के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष का प्रयोग किया जा सके। अतः शोधकर्त्ता जनसंख्या का निर्धारण करता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में मेरठ जिला के माध्यमिक विद्यालयो के कक्षा–9 के केवल 80 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श रीति.

शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने बहुस्तरीय दैव निदर्शन तथा सरल यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया।

प्रयुक्त किये गये उपकरण.

इस शोध अध्ययन के हेतु शोधकर्त्ता के द्वारा पारिवारिक वातावरण तथा अनुशासन प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

प्रश्नावली का विवरण.

इस प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न है जोकि पारिवारिक वातावरण तथा अनुशासन व्यवस्थाओं के तीन आयामों को ध्यान में रखकर बनायी गयी है। प्रश्नों का स्वर कक्षा 9 के विद्यार्थियों के अनुसार ही रखा गया है। प्रत्येक आयाम के लिए 16 कथन दिये गये हैं। जिनका विद्यार्थी उत्तर देते हैं।यह प्रश्नावली मूल रूप से चिन्हांकन सूची है। इस मापनी में विद्यार्थियों तथा उनके माता–पिता के व्यवहार से सम्बन्धित कथनों को दिया गया है। प्रश्नावली की विश्वसनीयता का निर्धारण परीक्षण–पुनर्परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग करके प्रश्नावली की विश्वसनीयता 0.74 पाई गयी है।

सांख्यिकीय विश्लेषण . आंकड़ों का विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्रस्तुत की गयी है।

तालिका संख्या .1
विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का अध्ययन

क्र.सं.	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत (%)
1.	दमनात्मक अनुशासन	16	20%
2.	प्रभावात्मक अनुशासन	42	52.50%
3.	मुक्त्यात्मक अनुशासन	22	27.50%

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों का सबसे अधिक समूह 52.50 प्रतिशत है। जो प्रभावात्मक अनुशासन व्यवस्था को प्रदर्शित करती है। अध्ययन में पाया गया कि कक्षा–9 के अधिकतर विद्यार्थियों का पारिवारिक अनुशासन एवं वातावरण प्रभावात्मक है। इसके साथ–साथ 27.50 प्रतिशत मुक्त्यात्मक अनुशासन को प्रदर्शित करता है। जबकि 20 प्रतिशत दमनात्मक अनुशासन को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सबसे कम 20 प्रतिशत विद्यार्थियों का पारिवारिक अनुशासन दमनात्मक होता है, जो प्रभावात्मक तथा मुक्त्यात्मक अनुशासन व्यवस्था की तुलना में काफी कम है।

तालिका संख्या–2
पारिवारिक वातावरण तथा दमनात्मक अनुशासन तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

क्र.सं.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन व्यवस्था	सह–सम्बन्ध
1.	16	पारिवारिक वातावरण तथा दमनात्मक अनुशासन	–0.21

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दमनात्मक अनुशासन व्यवस्था का नकारात्मक सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या–3
पारिवारिक वातावरण तथा प्रभावात्मक अनुशासन तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

क्र.सं.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन व्यवस्था	सह–सम्बन्ध
1.	42	पारिवारिक वातावरण तथा प्रभावात्मक अनुशासन	0.58

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावात्मक अनुशासन व्यवस्था का धनात्मक सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या–4
पारिवारिक वातावरण तथा मुक्त्यात्मक अनुशासन तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

क्र.सं.	विद्यार्थियों की संख्या	अनुशासन व्यवस्था	सह–सम्बन्ध
1.	22	पारिवारिक वातावरण तथा मुक्त्यात्मक अनुशासन	0.32

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मुक्त्यात्मक अर्थात् हस्तक्षेप रहित अनुशासन व्यवस्था का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन का निष्कर्ष.

1. जिन बच्चों के पारिवारिक वातावरण में दमनात्मक अनुशासनिक व्यवस्था पाई जाती है, उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि भी बहुत निम्न होती है।
2. जिन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में प्रभावात्मक अनुशासनिक व्यवस्था पाई जाती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।

3. जिन बच्चों के पारिवारिक वातावरण में मुक्त्यात्मक अर्थात् हस्तक्षेप रहित अनुशासनिक व्यवस्था पाई जाती है। उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि, दमनात्मक अनुशासनिक व्यवस्था वाले विद्यार्थियों से अधिक होती है।

शोध अध्ययन का शैक्षिक दृष्टिकोण.

शोध अध्ययन हमें यह बताता है कि पारिवारिक वातावरण तथा प्रभावात्मक अनुशासनिक व्यवस्था तथा हस्तक्षेप रहित अनुशासनिक व्यवस्था का शैक्षिक निष्पत्ति पर दमनात्मक अनुशासनिक व्यवस्था से ज्यादा सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः शैक्षिक निष्पत्ति को बेहतर करने के लिए अन्य कारकों जैसे. विद्यालयों, कक्षा वातावरण एवं शिक्षण शैली पर ध्यान देना आवश्यक है तथा शिक्षकों एवं अभिभावकों का यह महत्वपूर्ण दायित्व है कि वे अपनी भूमिका को ओर अधिक जिम्मेदारी से निभाएँ।

भविष्य में शोध हेतु सुझाव

इस शोध समस्या से सम्बन्धित अथवा इसके समान ही कुछ दूसरे क्षेत्र जिन पर शोध किया जा सकता है। वे इस प्रकार है.

1. समाज के विभिन्न स्तरों जैसे. उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग में पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासनिक व्यवस्थाओं की तुलना की जा सकती है।
2. पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव को उनके व्यक्तित्व पर भी देखा जा सकता है। अतः यह पता लगाया जा सकता है कि तीनों प्रकार की अनुशासनिक व्यवस्था (दमनात्मक, प्रभावात्मक एवं मुक्त्यात्मक) में रहने वाले विद्यार्थियों का व्यक्तित्व कैसा है?
3. प्राथमिक विद्यालय या शिक्षारत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर कक्षा अनुशासनिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

फौकॉल्ट, एम. (1995), अनुशासन और सज़ारू जेल का जन्म. एलन शेरिडन द्वारा अनुवादित। पुरानी किताबेंरू न्यूयॉर्क।

कृष्णन, ए. (2009), शैक्षणिक अनुशासन क्या हैंश साउथैम्पटन विश्वविद्यालय, एनसीआरएम वर्किंग पेपर श्रृंखला 03/09। http://eprints.ncrm.ac.uk/783/1/what_are_academic_disciplines.pdf

लॉन, एम., और फर्लांग, जे. (2009), यूके में शिक्षा के अनुशासन: भूत और छाया के बीच। शिक्षा की ऑक्सफोर्ड समीक्षाए 35(5), 541-552।

सिम्बा, एन.ओ. (2009), होरोनी उप–काउंटी, केन्या में सार्वजनिक प्राथमिक विद्यालयों मे विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर अनुशासन का प्रभाव

एहियाने, ओ.एस. (2014), अनुशासन और शैक्षणिक प्रदर्शन (लागोस, नाइजीरिया में चयनित माध्यमिक विद्यालयों का एक अध्ययन)। प्रगतिशील शिक्षा और विकास में अकादमिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 3(1),181–194। http://hrmars.com/hrmars_papers/Discipline_and_Academic_Performance.pdf

कोठारी, सी.आर. (2011)। अनुसंधान पद्धतिरू विधियाँ और तकनीकें (दूसरा संस्करण)। http://books.google.com

नजोरोगे, पी.एम., और न्याबुतो, ए.एन. (2014), केन्या में शैक्षणिक प्रदर्शन में एक कारक के रूप में अनुशासन। शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान जर्नल. 4(1), 289–307 doi:10.5901/jesr.2014.v4n1p289

अनैस्टसाई, ए0 (1970) ''साइकोलोजिकल टेस्टिंग, न्यूयॉर्क।''

बेस्ट, जे0डब्ल्यू0 (1978)	''रिसर्च इन एजूकेशन, प्रेण्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।''
एफ0एल0 व्हिटी	''दा एलीमेण्ट ऑफ रिसर्च''
फ्रैन, पी0 (1971)	''थ्योरि एण्ड प्रैक्टिस ऑफ साइकोलोजिकल टेस्टिंग, थर्ड इण्डिया, ऑक्सफोर्ड एण्ड पब्लिशिंग आलसो इन न्यू दिल्ली, बोम्बे एण्ड कलकत्ता।''
गैरेट, हेनरी	''स्टेटिक्स साइकोलोजिकल एण्ड एजूकेशन, लौंगमैन ग्रीनट सी0, लन्दन।''
गुप्ता, एस0पी0	''शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, साहित्य भवन, इलाहाबाद''
जगन्नाथ, के0 (1986)	''होम एनवायरमेन्ट एण्ड एकेडमिक एचीवमेण्ट, पी0पी0 18–25''
खन्ना, एम0 (1982)	जू0 हाई स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके सामाजिक व आर्थिक आधार के बीच के सम्बन्धों का अध्ययन, (शोध शिक्षाशास्त्र), चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
पाण्डे, के0 (1985)	''रिलेशन बीटवीन होम एनवायरमेण्ट एण्ड एचीवमेन्ट एमंग डिपरोवाइड प्रीडोलेसेण्ट, जरनल ऑफ दा इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन रिसर्च, पी0पी0 53''
रस्तौगी, अलका रानी (1988)	''ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ फेमिली रिलेशन इन एजूकेशन एण्ड लेस एजूकेटिड एण्ड इफेक्ट ऑन दा वैल्यूज ऑफ देअर वर्डस, पी–एच0डी0 थीसिस, सी0सी0एस0 यूनिवर्सिटी, मेरठ।''
शर्मा, आर0ए0	''एजूकेशनल रिसर्च, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पी0पी0 99–121 व 178–197''